अनमोल सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

फरीदाबाद, दिनांक 12 नवम्बर 2017

चल सतगुरू की हाट, ज्ञान बुद्धि पाईये।

गुरू क्यों आता है इस संसार में? गुरू काम क्या है? गुरू का काम है तारना। गुरू कैसे तारता है? गुरू ज्ञान देकर तारता है। इस संसार में जितने भी मनुष्य हैं सब अज्ञान के अंधकार में डूबे हुए हैं। उनको यह नही पता इस संसार में सच क्या है और झूठ क्या है। वो झूठ को सच समझकर पकड़कर बैठ गए है, और उसी के साथ चिपके हुए हैं। जब आप झूठ का सहारा लोगे, तो क्या आप सुखी रहोगे? कभी सुखी नही रहोगे। सच का सहारा लो, तो सुखी रहोगे। ये सारा संसार झूठ में लिपटा हुआ है। झूठ का सहारा लेकर बैठा है। ये घर मेरा है, ये गाड़ी मेरी है, ये बेटा मेरा है, ये बीबी मेरी है, ये परिवार मेरा है। मेरी–मेरी करके, इसी में लिपटा हुआ है। जबकि उसका कुछ है ही नही। क्या है मेरा? अगर मेरी हवा अभी निकल जाती है, तो क्या है मेरा? इस शरीर से कपड़े भी, घड़ी, अँगूठी, सबकुछ उतार लेंगे। और ले जाएँगें शमशान में आग लगा देंगे। यही है सच्चाई। हमारा कुछ भी नही है संसार में। फिर भी हम मेरा–मेरा करते रहते हैं। हमको याद ही नही है, जब हम जाएँगें तो सबकुछ यहीं छोड़कर जाएँगें। और फिर भी हम भयभीत हैं। मृत्यु से भयभीत होना भी अज्ञान है। जीवन किसने बनाया? उसी मालिक ने बनाया। मृत्यु किसने बनाई? उसी मालिक ने बनाई। क्या भगवान कोई गलती कर सकता है? भगवान कभी गलती नही कर सकता है। जन्म भी अच्छा है और मृत्यु भी अच्छी है। जब किसी का जन्म होता है तो हम खुशी मनाते हैं, मिठाईयाँ बाँटते हैं। तो फिर हम मृत्यु पर क्यों नही मिठाई बाँटते हैं जबकि मृत्यु भी उसी मालिक ने बनाई है। हमें ड़र है, हमारी मृत्यु हो जाने के बाद हमारे परिवार का क्या होगा। हमारे बच्चों को कौन पालेगा? क्या तुम्ही पालने वाले हो? जिसने पैदा किया है, वही पालने वाला है। मेरा बेटा रोज शुबह फ्लैट के चारो तरफ वाले Area में ही दौड़ लगाता है। लेकिन एक दिन उसके मन में क्या आया, वो टाउन पार्क चला गया। उसने वहाँ एक Female Dog को देखा, जो पेड़ से बँधी हुई थी और सर्दी से काँप रही थी। उसने सोचा कोई बाँध कर कहीं घूम रहा होगा। लेकिन जब वो एक घण्टे बाद दौड़ लगा कर उसके पास आया, तो वो अब भी वहीं बँधी हुई थी। और सब लोग भी जा चुके थे। उसने आस पास पूछा कि ये Female Dog किसका है? लेकिन सबने मना कर दिया। वो उसको अपने साथ लेकर आ गया। उसे डॉक्टर के पास लेकर गया। उसका Treatment करवाया। लेकिन बाद में उसको पता चला कि वो Pregnent है, तो हमारा ड्राईवर उसको डॉक्टर के पास ले गया, डाक्टर ने उसका Ultra sound किया। हाँ उसके पेट में बच्चे हैं। तो बेटे ने डॉक्टर को फोन करके कहा कि इसके बच्चे खत्म करो। डॉक्टर ने दो इंजेक्शन लगा दिए। दूसरे दिन फिर दो इंजेक्शन लगा दिए। डॉक्टर बोला इसको एक टेबलेट रोज दिया करो, इसके बच्चे गिर जाएँगें। हफ्ता दस दिन हो गए, कोई बच्चा ही नही गिरा। हम फिर डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने फिर से Ultra Sound किया। डॉक्टर बोला इसके सभी बच्चे जिंदा हैं, एकदम स्वस्थ हैं। अब तो इसके बच्चे ही होंगे। कल दोपहर वो छटपटाई और बेड के नीचे चली गई और आठ बच्चों को जन्म दिया। मैं ये कहानी क्यों बता रहा हूँ? जाको राखे साईंयाँ, मार सके ना कोय। दो बार इंजेक्शन लगवाए, लेकिन कुछ नही हुआ। बच्चे आने थे, आ गए। देखो ये Proof करता है कि हमारे हाथ में कुछ भी नही है। जो होना होता है वो होकर रहेगा। ना जन्म हमारे हाथ में है, ना मृत्यु हमारे हाथ में है। हमारे हाथ में है मैं और मेरा। ये मेरा घर है, ये मेरी गाड़ी है, ये मेरा बैंक बैलेंस है। जबकि मेरा कुछ नही है संसार में। जैसे हम खाली हाथ आए थे, वैसे ही हम खाली हाथ चले जाएँगें। हमको ड़र लगता है, हमारे बाद हमारे परिवार का क्या होगा? छोटे–2 बच्चे हैं, उसका पति मर

जाता है, हम सोचते अब इस बेचारी का क्या होगा? इन बच्चों को कौन पालेगा? इसी चिंता में हम रहते हैं। लेकिन कल्पना करें आजतक कितनी छोटी लडकियाँ विधवा हो चुकी हैं। इस संसार में लाखों करोड़ों ऐसी लड़कियाँ होंगी, जिनके छोटे छोटे बच्चें हैं और वो विधवा हो गई हैं। क्या वो पले नहीं? क्या वो बच्चे बड़े नही हुए? कौन पालने वाला है हमको? हम पालने वाले नही हैं। पालने वाला वही एक मालिक है। हमारे हाथ में कुछ नही है, वही पालता है सबको। जिस किसी को ले जाना है, उस परिवार के जीवन यापन का पहले ही बन्दोवस्त करके रखता है। फिर उस आदमी को उठाकर ले जाता है। ये उसकी व्यवस्था है। लेकिन हमें नही मालूम उसकी व्यवस्था क्या है? हम चिंता करते रहते हैं। पहाड़ पर एक पेड़ है। अब उस पेड़ को कौन खाद देता है, कौन पानी देता है? लेकिन वो फिर भी जिंदा है। ये उसकी व्यवस्था है। अगर हम उसकी व्यवस्था में दखल देने जाएँगें, तो नुकसान हमारा ही होगा। उसकी व्यवस्था में कोई दखल नही दे सकता। उसको जो करना है, वो कर लेता है। हमारा क्या होगा, हमारे जीवन का पालन–पोषण कैसे होगा, हमें क्या और कब मिलेगा, सबकुछ पहले से ही तय है। लेकिन हमें नही मालूम, इसलिए हम चिंता करते रहते हैं। लेकिन उसे मालूम है, वो सबकुछ कर लेता है, और आवाज भी नही करता है, मैंने किया, मैं करता हूँ। जैसे हम करते हैं, मैंने किया, मैं करता हूँ, मैंने मकान बनाया। तुम कौन होते हो मकान बनाने वाले? अगर तुम ही मकान बनाने वाले होते, तो संसार में सबके पास मकान होता। लेकिन ऐसा नही है, किसी के पास मकान है और किसी के पास मकान नही है। क्यों? क्योंकि मकान बनाने वाला वो मालिक है। वो जानता है किसको मुझे मकान देना है और किसको नहीं। और किसको किस समय देना है, वो भी जानता है। उसने समय निश्चित कर रखा। हमें क्या करना है? हमें सिर्फ उस पर विश्वास करना है। विश्वास रखो, सारे काम हो जाएँगें। लेकिन समय पर हो जाएँगें। अगर आप कहो मुझे आज ही चाहिए, तो आज उसके पास नही है। उसके पास है समय। सबकुछ समय पर मिल जाएगा। मकान भी मिल जाएगा, गाड़ी भी मिल जाएगी। सब कुछ मिल जाएगा, उस पर विश्वास रखो। ये ज्ञान कहाँ से आएगा, हमारे पास? ये ज्ञान हमारे पास आएगा, चल सतगुरू की हाट, ज्ञान बुद्धि पाइये। ये ज्ञान सिर्फ सतगुरू की दुकान पर मिलता है। ज्ञान क्या चीज है? ज्ञान सिर्फ दो शब्द हैं इस संसार में सच क्या है और झूठ क्या है? बस यही ज्ञान है। आप सोचोगे कि बड़ी–2 पोथियाँ पढ़ना, रामायण पढ़ना, महाभारत पढ़ना, ज्ञान है। ये ज्ञान नहीं है। पोथियाँ पढ़ने से अहंकार हो जाता है। ज्ञान सिर्फ दो शब्द हैं इस संसार में सच क्या है और झूठ क्या है? जिसको ये बात समझ आ गई, वो ज्ञानी बन गया। फिर उसकी इस संसार से मुक्ति हो जाती है। फिर नही आना उसको इस संसार में। लेकिन ये समझना कोई आसान काम नही है। क्योंकि हम झूठ में इस ऐसे फंसे हुए हैं कि हमको सच समझ में ही नही आता। क्योंकि हमको झूठ में रहने की आदत पड़ गई है। जब कोई हमें सच बात बताता है, तो हम कहते हैं कि ये सच हो ही नही सकता। और इसीलिए हम दुखी हैं। इसलिए हम बार–बार इस संसार में जन्मते हैं और मरते हैं। बहुत मुश्किल है सच को समझना। ये शरीर भी अपना नही है। ये शरीर कब आपका साथ छोड देगा, आपको पता भी नही चलेगा। अन्जाने में हमको पता है कि ये शरीर मेरा नही है। हम कहते है आज मेरे सिर में दर्द है। तो ये कौन कहता है? किसका सिर? अंजाने में आपने कह दिया मैं अलग हूँ और मेरा शरीर अलग है। लेकिन आपको पता ही नही मैं क्या कह रहा हूँ? ये शरीर भी हमारा नही है। यही तो ज्ञान है। सतगुरू सबसे पहले यही तो बताता है। भैया तुमको जिस शरीर पर इतना नाज है, ये शरीर भी आपका नही है। बाकी चीजें मकान, धन–दौलत, ये तो बाद की चीजें हैं। सबसे नजदीक हमारा शरीर ही हमारा साथ छोड़ देगा। यही तो ज्ञान है, गुरू यही बात तो बताता है। हम अज्ञान के अंधकार में लिपटे हुए हैं। मैं हूँ, मेरा शरीर है, वो मर गया, मैं नही मरूँगा। सबसे पहले सतगुरू यही बात बताता है। ये जो तुम्हारा शरीर है, ये भी तुम्हारा नही है। ये भी उसी मालिक का है। कब ले जाएगा, तुमको पता भी नही चलेगा। अगर तुमको सुखी रहना है

तो इस ससार में कुछ भी अपना मत समझो। सबसे पहले अपने शरीर से शुरूआत करो, ये शरीर भी मेरा नही है। फिर अपने रिश्तेदारों पर आ जाओ, जो आपके सबसे नजदीक हैं। वो भी अपने नहीं हैं, कोई भी नही है अपना। लेकिन प्रेम सबसे करो। लेकिन विशवास किसी पर मत करो। कौन कब साथ छोड़ देगा, पता भी नही चलेगा। इसलिए संसार में कोई रिश्तेदार नहीं है अपना। हमारा एक ही रिश्तेदार है, वो है सतगुरू। उसी पर विश्वास रखों वो आपका साथ कभी नहीं छोड़ेगा। आपके जितने भी सांसारिक रिश्ते हैं वो एक एक करके साथ छोड़ देंगे। मैंने शादी की, मैं सोचता था मेरी बीबी मेरा साथ कभी नहीं छोड़ेगी। क्या–2 प्लान बनाए थे रिटायरमेंन्ट के बाद हम यहाँ जाएँगें वहाँ जाएँगें। लेकिन सारे प्लान धरे के धरे रह गए और वो निकल गई। यही संसार है, गुरू यही समझाने आता है। किसी शायर ने कहा है–देखी जमाने की यारी, बिछड़ें सभी बारी बारी। एक–एक करके सभी चले जाते हैं। कोई पहले चला जाता है, कोई बाद में चला जाता है। एक सतगुरू ही है जो हमेशा रहता है, वो नाशवान नही है। उसी को पकड़ो तुम तर जाओगे। जिसका मोक्ष होता है, उसको पहले ही पता लग जाता है। सबसे पहले आपकी सारी इच्छाएँ खत्म हो जाएँगी। जब आपकी कोई इच्छा नहीं रहेगी, तो आपका मोक्ष निश्चित है। फिर इच्छाओं के बाद काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग, द्वेष, ईर्ष्या, नफरत, बहुत सारी चीजें आती हैं। ये चीजें भी खत्म हो जाएँगी। फिर आप खुद उस मालिक का रूप बन जाओगे। आपकी इच्छाएँ भी खत्म हो गई, आपकी संसार की कीचढ़ भी खत्म हो गई। फिर क्या रह गया? फिर भगवान का रूप रह गया। फिर आप खुद भगवान बन जाओगे। जो खुद भगवान बन गया, फिर उसको संसार में आना नहीं है। उसका मोक्ष हो गया। और आपको खुद अहसास होगा, हाँ ये मेरा आखिरी जन्म है।

राधास्वामी।